भाषा अध्ययन की दिशाएँ :— भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ :-

(1) भाषांगों का अध्ययन - भाषा की विभिन्न इकाइयों पर विचार करना भाषा अध्ययन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिशा है, आज इन चारों भाषिक इकाइयों का अध्ययन विश्लेषण एवं व्यापक हो गया है इसलिए आज उनसे संबंधित ध्वनि-विज्ञान, शब्द विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान आदि नाम प्रचलित हो गया।

ध्वनि अध्ययन :— भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि अध्ययन के अंतर्गत ध्वनि क्या है? ध्वनि की संप्रेषण प्रक्रिया क्या है? इसकी उत्पत्ति कैसे होती है, एवं इसके ध्वनि में भेद क्यों और कैसे होता है ध्वनि के उच्चारण में कौन-कौन से अवयव सहायक होते हैं ध्वनि परिवर्तन के कारणों और दिशाओं का विवेचन भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है।

शब्द अध्ययन — शब्द क्या है? शब्दों की व्युत्पत्ति, शब्द परिवर्तन की दिशाएँ, शब्दों की संरचना का तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण है।

वाक्य अध्ययन :- वाक्य का गठन कैसे होता है वाक्य के कितने भेद हैं? वाक्य में पद क्रम अन्विति निकटस्थ अवयव, रूपांतरण एवं परिवर्तन के कारण और उनकी दिशाएँ आदि का अध्ययन वाक्य अध्ययन के अंतर्गत किया जाता है।

अर्थ अध्ययन :- अर्थ क्या है? अर्थ क्यों परिवर्तित हो जाता है, एक ही धातु से निकलने वाले दो भिन्न शब्दों के भिन्न अर्थों के क्या कारण है। अर्थ भाषा की आत्मा है, इस अध्ययन के अंतर्गत मुख्यतः शब्दों के अर्थ निर्धारण एवं अर्थ परिवर्तन उसकी दिशाओं और अर्थ परिवर्तन के कारणों पर विचार किया जाता है।

भाषा के अन्य क्षेत्रों का अध्ययन :— भाषा का क्षेत्र व्यापक है, विस्तृत है, इसीलिए इसके अध्ययन के क्षेत्र भी दिन-प्रतिदिन विस्तार पा रहे हैं। भाषा के क्षेत्र से संबंधित अध्ययन का व्यवस्थित रूप देने के लिए निम्नलिखित अध्ययन की दिशाओं को अपनाया जाता है।..

P.T.O.

Scanned with Cam

(i) वर्णनात्मक भाषा अध्ययन :- किसी भाषा के काल विशेष के स्वरूप के विश्लेषण को वर्णनात्मक भाषा 'अध्ययन' कहते हैं। इसी को व्याकरण भी कहते हैं। इस अध्ययन में भाषा के जिन तत्वों को (ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य, अर्थ) का अध्ययन किया जाता है, उनका संबंध एक काल विशेष से होता है। इसमें न तो भाषा का विकास दिखाया जाता है और नहीं तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। ऐसा अध्ययन ऐतिहासिक भाषा अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी है, विभिन्न कालों के वर्णनात्मक भाषा अध्ययन को काल-क्रम में व्यवस्थित कर देने पर ऐतिहासिक भाषा अध्ययन बन जाता है। यदि किसी भाषा का वर्णनात्मक अध्ययन करना चाहें, तो भाषा की विभिन्न इकाईयों के आधार पर आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल की भाषा पर विचार कर सकते हैं। किसी भी भाषा की एक काल की विशेषताएँ दूसरे काल की विशेषताओं से निश्चय ही भिन्न होती हैं।

(ii) ऐतिहासिक भाषा अध्ययन :- इसे काल-क्रमिक भाषा अध्ययन भी कहते हैं। वर्णनात्मक भाषा अध्ययन में किसी भाषा के काल विशेष के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है; परन्तु ऐतिहासिक भाषा अध्ययन में एक ही भाषा के विभिन्न कालों के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। जिस प्रकार किसी परिवार की वंशावली बनाकर उससे संबंधित कई पुश्तों के अध्ययन से उसका क्रमिक विकास का लिया जाता है; उसी प्रकार भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न कालों की भाषा का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। किसी भाषा के पुराने रूपों से नए रूपों का विकास किस प्रकार हुआ, इस अध्ययन से इस का उद्घाटन होता है। भाषा परिवार का अध्ययन निश्चय ही भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन की ही देन है। भाषा परिवार में उन्हीं भाषाओं को एक परिवार के अंतर्गत उन्हीं भाषाओं को शामिल किया जाता है, जिन भाषाओं में स्वरूपगत और अर्थगत समानता पाई जाती है, जैसे- भारोपीय भाषा परिवार में भारत और यूरोप की भाषाएँ आती हैं इस परिवार की समस्त भाषाएँ विकास प्रक्रिया में भी पर्याप्त समानता रखती हैं। हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास हुआ है — वैदिक संस्कृत > लौकिक संस्कृत > प्राकृत > अपभ्रंश > हिंदी।

P.T.O.

Scanned with Cam

सिद्धान्त: भाषा प्रतिपल परिवर्तित होती रहती है, यह परिवर्तन काफी सूक्ष्म होता है, इसीलिए इस सूक्ष्म परिवर्तन को लक्ष्य करना कठिन होता है कालांतर में जब यह परिवर्तन पुंजीभूत हो जाता है, तभी इसका अनुभव भी किया जाता है, इस प्रकार विकास के सभी सोपानों की चर्चा भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन के अंतर्गत आती है।

(iii) तुलनात्मक भाषा अध्ययन :— संसार में प्रत्येक वस्तु की अच्छाई या बोलना तुलनात्मक होती है, भाषा विज्ञान में तुलनात्मक भाषा अध्ययन का विशेष महत्व है। भाषा अध्ययन की इस पद्धति में एक परिवार की दो या दो से अधिक भाषाओं का विभिन्न दृष्टिकोण से विचार विश्लेषण किया जा सकता है। भाषा का तुलनात्मक अध्ययन भाषा की किसी इकाई शिक्षा धारा और रचना पर आधारित हो सकता है इस प्रकार के अध्ययन से जहाँ भाषायी समता और विषमता का ज्ञान होता है, वहीं अनेक सैद्धान्तिक तत्व भी उभर कर सामने आते हैं। तुलनात्मक भाषा अध्ययन से भाषा के गुण-दोष भी प्रकट हो जाते हैं।

(iv) सांख्यिकीय भाषा अध्ययन :— भाषा अध्ययन की यह पद्धति गणना पर आधारित होती है, इसमें किसी साहित्यकार नेता विद्वान के द्वारा प्रयुक्त या इनकी रचना विशेष में प्रयुक्त ध्वनि, शब्दों, वाक्यों आदि की गणना करते हुए उस पर अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति से यह तथ्य भी जानी जाती है, कि किस रचना विशेष में किस रचनाकार के द्वारा किस ध्वनि, शब्द या वाक्य का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है, और क्यों किया गया है। इस प्रकार इसे किसी भाषा के इकाई के सर्वाधिक प्रयोग के कारण ही सामने आ जाते हैं। भाषा के इस अध्ययन से भाषा-साहित्य और व्यक्ति कोष का निर्माण भी संभव है।

(v) मनोभाषा का अध्ययन :— यह एक नवीन भावपूर्ण दिशा है, इसमें व्यक्ति विशेष की भाषा के आधार पर उसकी मनःस्थिति का अध्ययन किया जाता है।

P.T.O.

Scanned with Cam

मनुष्य शिक्षित हो अशिक्षित बालक हो या प्रौढ़ स्त्री हो या पुरुष जब भी कुछ कहना चाहता है तो उसके मन में भाषा आंदोलन होता है। यह मानसिक भाषा आंदोलन सामान्य तीव्र अथवा मंद रूप में हो सकता है। ये भाव शब्दों के माध्यम से प्रकट होते हैं, जिसे मनोभाषा अध्ययन से जाना जाता है। वर्तमान युग में बाल-विकास तथा विकृतियों के सुधार के संदर्भ में मनोभाषा अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस पद्धति में किसी भी साहित्य का या सामान्य व्यक्ति की भाषा से उसकी मानसिक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

Scanned with Cam